मेंढक का नन्हा बच्चा

एच. ई. टॉड

चित्र: वैल बिरो

मेंढक का नन्हा बच्चा
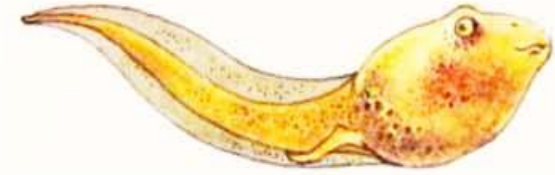
एच. ई. टॉड

चित्र: वैल बिरो

शुरुआती वसंत के दौरान यह तालाब कितन सुंदर दिखता है. लेकिन उसके ऊपर तैरती हुई गांठों वाली वो जेली क्या है?

वसंत की शुरुआत में
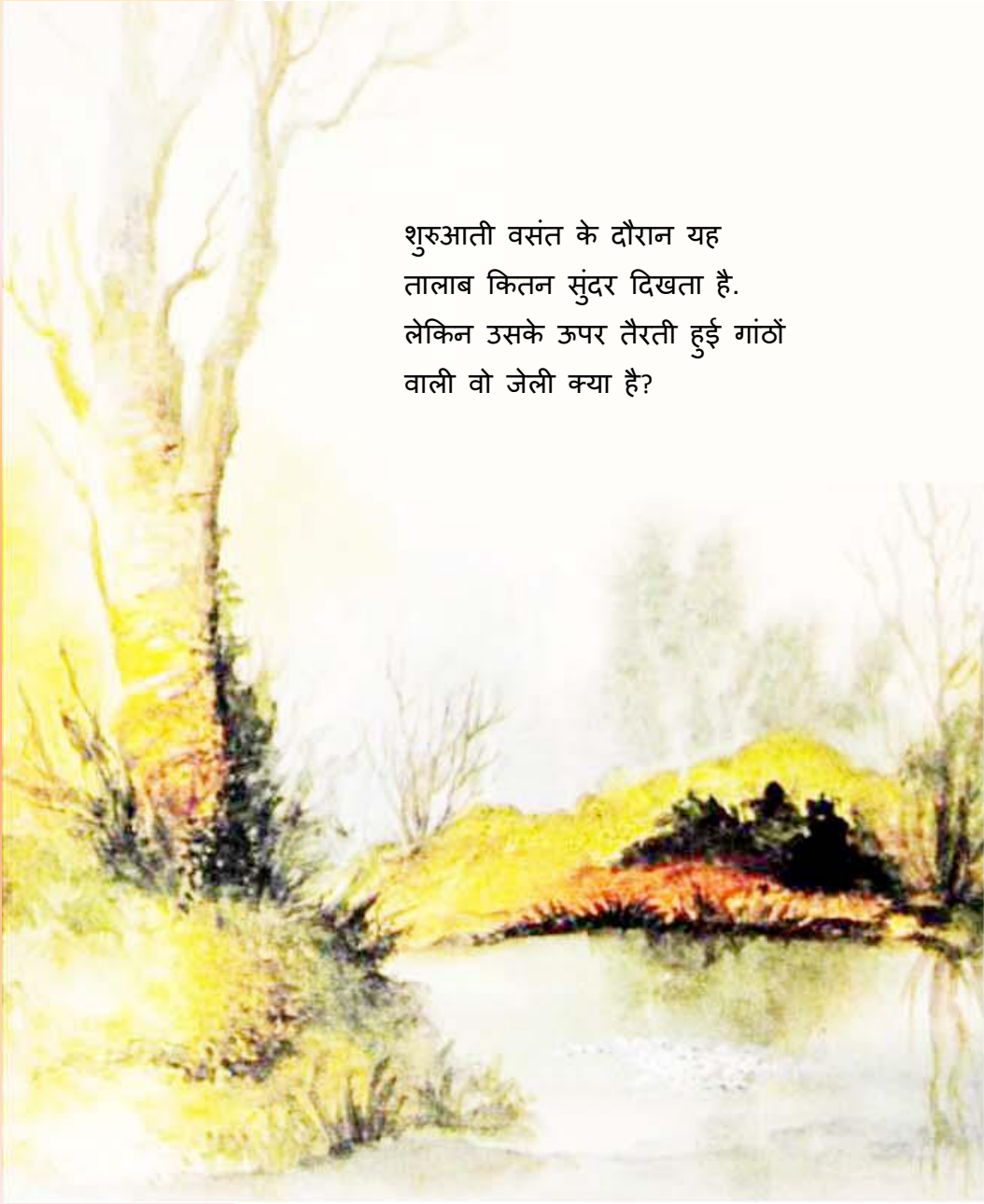
यदि आप करीब से देखेंगे, तो आप पाएंगे कि वो वास्तव में एक रोमांचक चीज़ है जिसे मेंढक के अंडे (यानि फ्रॉगस्पॉन) कहा जाता है. जेली से ढके उन छोटे-छोटे काले धब्बों को देखें. और खासतौर पर बीच वाले काले धब्बे को देखें.

वो अभी तक यह नहीं जानता है - लेकिन वही इस कहानी का असली हीरो है.

लेकिन वो इस जेली में फँसा हुआ क्या कर रहा है?

क्या आप देख रहे हैं, उसकी पूँछ बड़ी हो गई है!

पहले इस तरह

फिर उस तरह.

क्या वो अपनी पूँछ हिला सकता है?

हाँ, निश्चित रूप से वो अपनी पूँछ हिला सकता है!
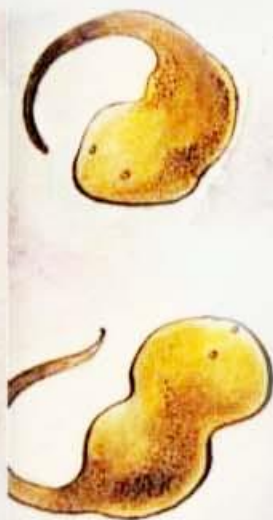
एक आखिरी बार और!

अब वो जेली से मुक्त हो गया है.

दो सप्ताह बाद

अब वो मछली की तरह तैर सकता है, उन गलफड़ों के साथ जो उसके सिर के दोनों तरफ उग आए हैं.

वो मछली की तरह पानी के नीचे भी सांस ले सकता है.
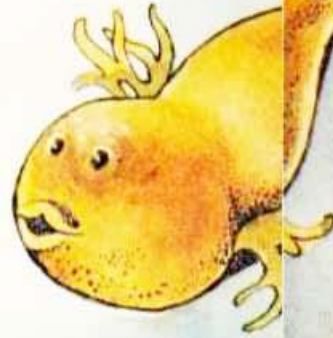
लेकिन वो मछली नहीं है.

वो एक छोटा टैडपोल यानि मेंढक का बच्चा है.

एक माह बाद

वो पूरे तालाब में सबसे तेज तैरने वाला नन्हा टैडपोल है.

लेकिन-बाहर देखो!
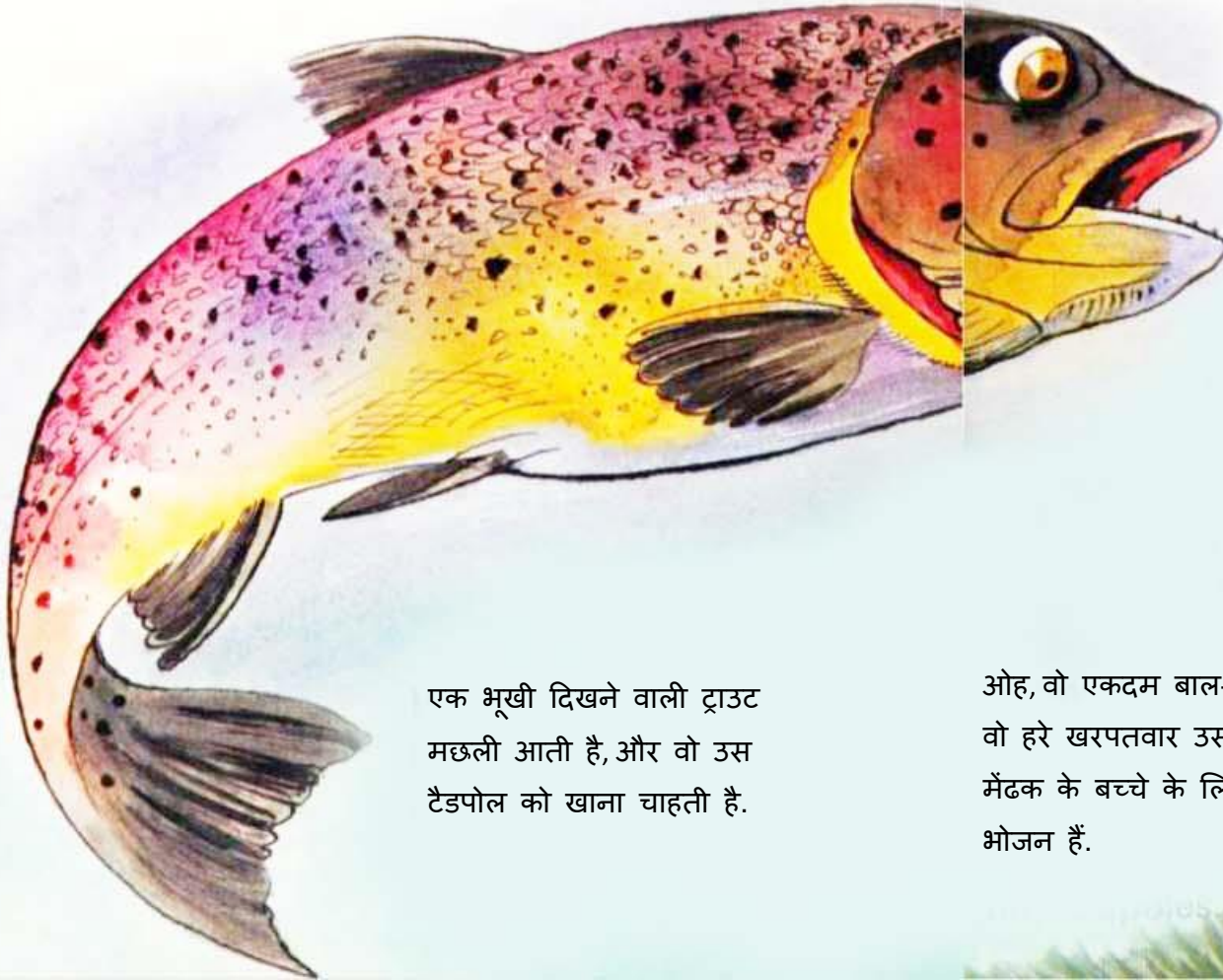
एक भूखी दिखने वाली ट्राउट मछली आती है, और वो उस टैडपोल को खाना चाहती है.

जल्दी!

खरपतवार में तेज़ी से घुस जाओ.

पहले एक तरफ़,

फिर दूसरी तरफ़.
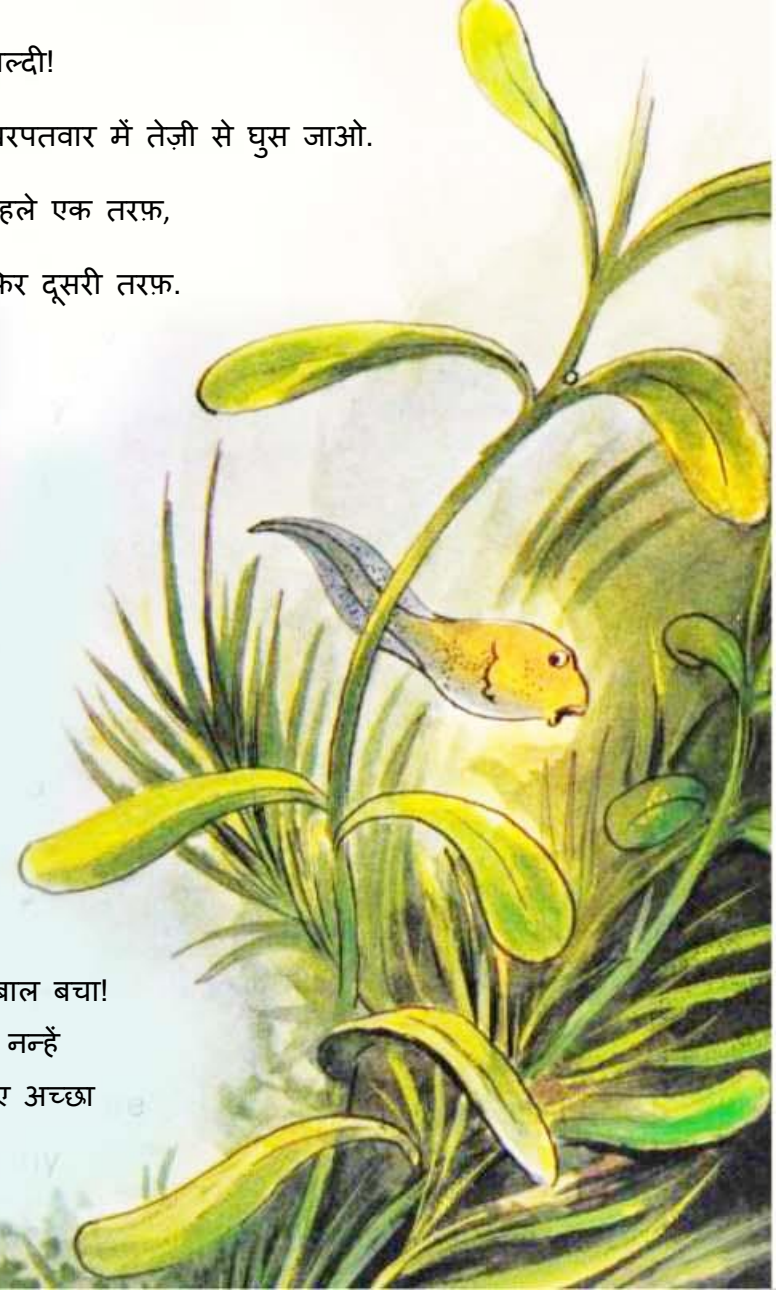
ओह, वो एकदम बाल-बाल बचा! वो हरे खरपतवार उस नन्हें मेंढक के बच्चे के लिए अच्छा भोजन हैं.

दो सप्ताह बाद

उसकी पूँछ के पास दो अजीब सी दिखने वाली घुंडियाँ उग रही हैं.

वे क्या हो सकती हैं?

वे पैरों में बदल रहे हैं! हाँ, उसके दो पैर बड़े हो गए हैं, और प्रत्येक पैर में एक जाल है!
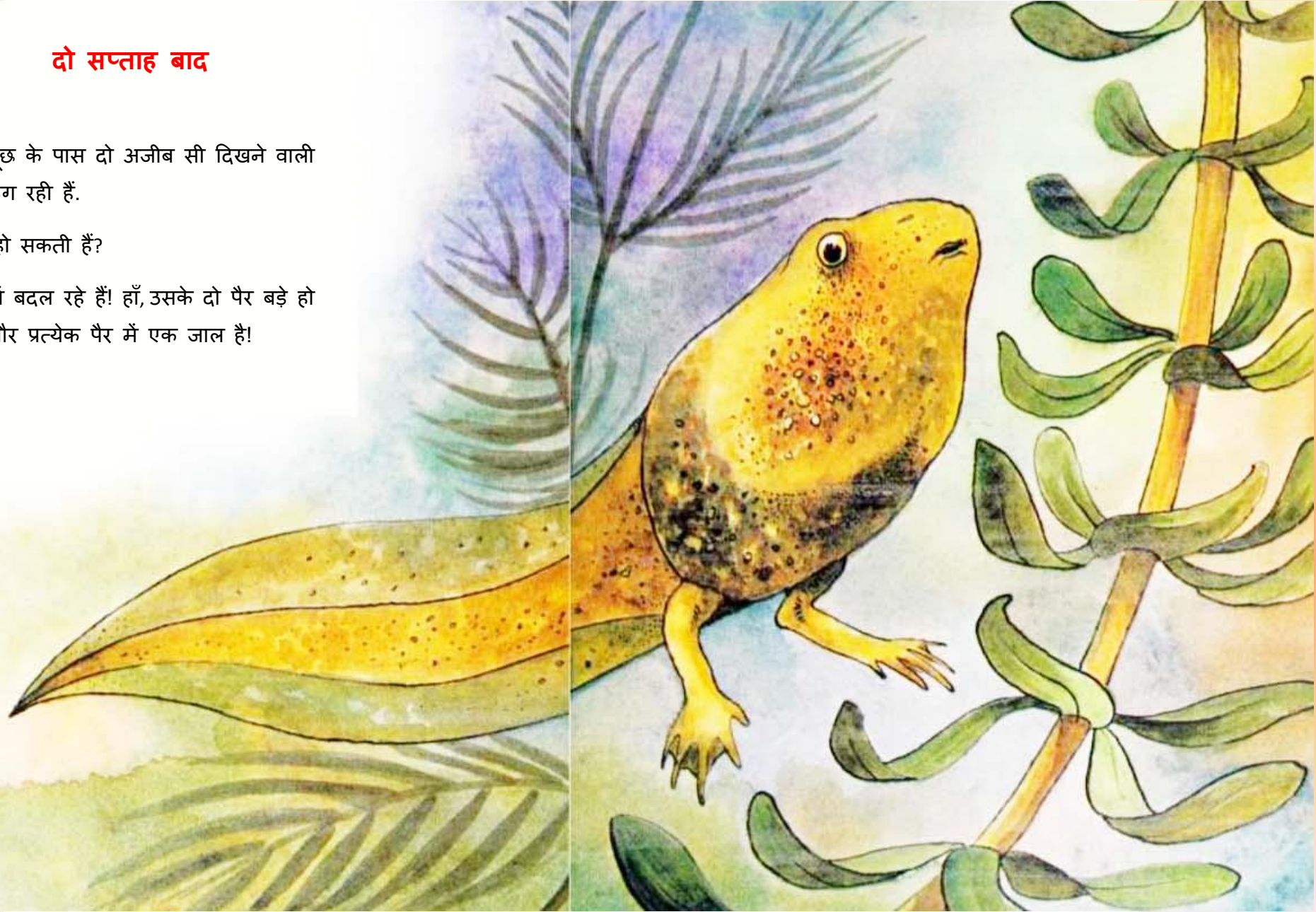
ध्यान से!

उस रेंगने वाले जल साँप को भी,
मेंढक का बच्चा पसंद है.

फिर से मेंढक का बच्चा
घास-फूस में छिप जाता है.

पहले यहां,

फिर वहां.
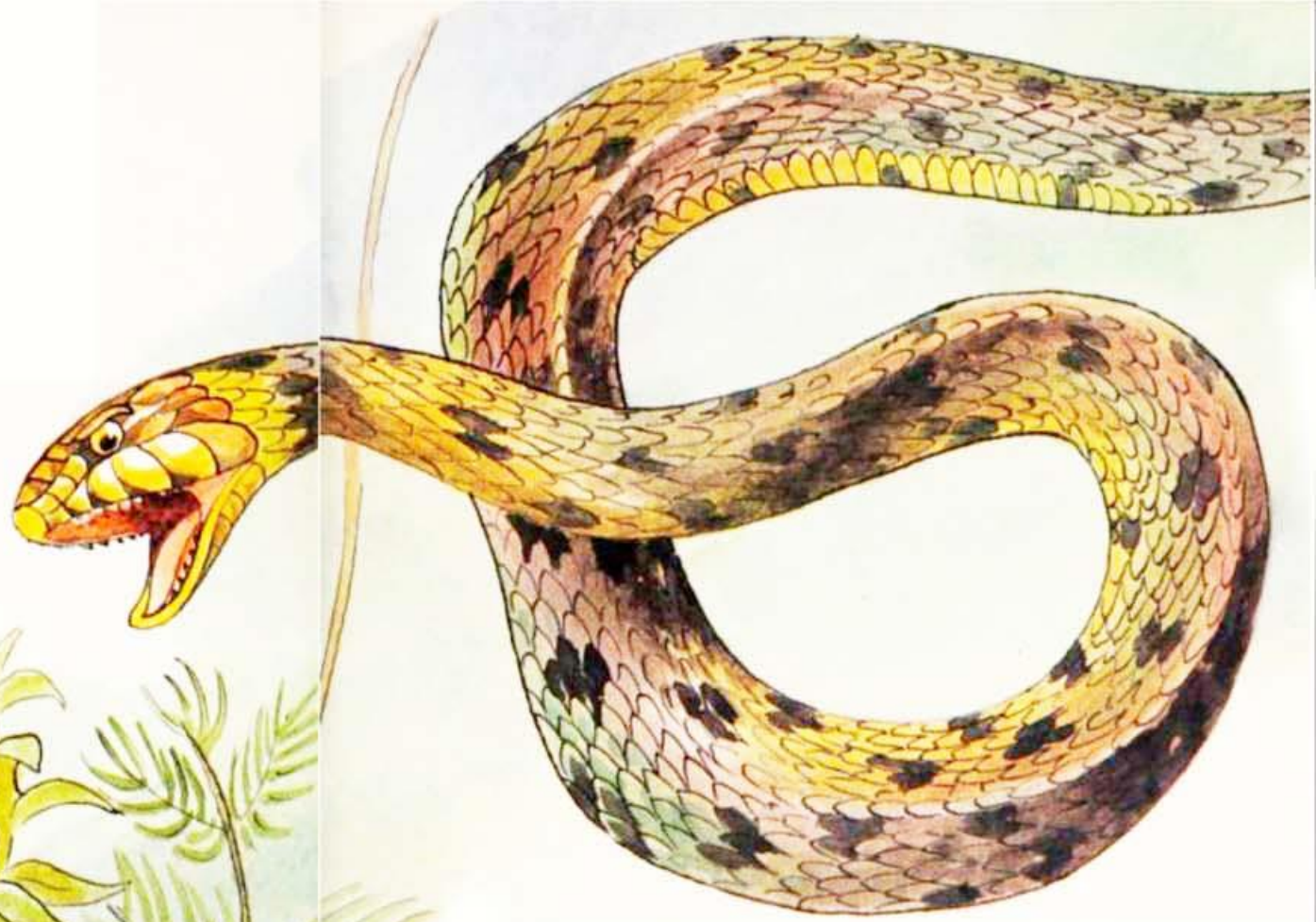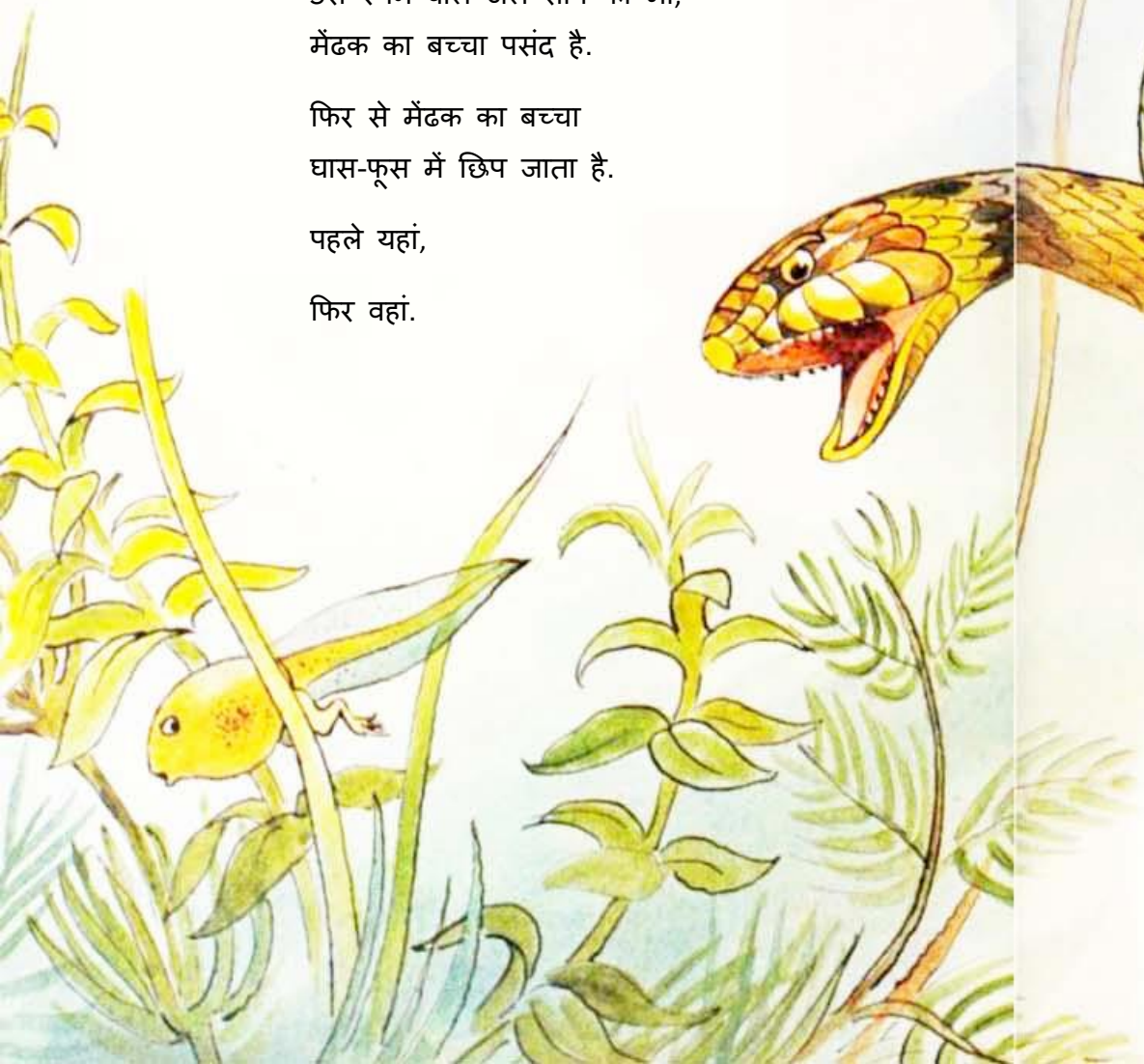
अच्छा - अब जल साँप चला गया है.

नन्हें मेंढक के बच्चे को सतर्क रहना चाहिए. तालाब में कई खतरनाक जीव हैं और नन्हें मेंढक के बच्चे के पास अपनी रक्षा के लिए दांत तक नहीं हैं.

एक माह बाद

अब वो दो पैरों और एक लंबी पूंछ वाला
बड़ा अजीब सा दिखने वाला प्राणी है.
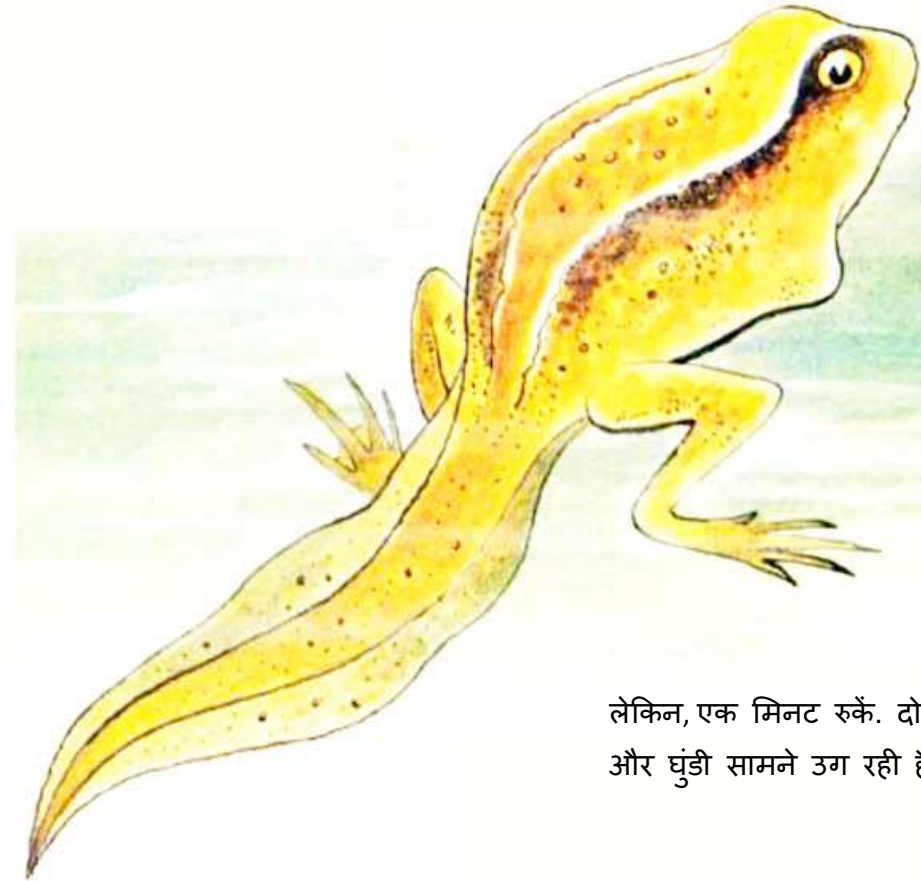
लेकिन, एक मिनट रुकें. दो
और घुंडी सामने उग रही हैं.
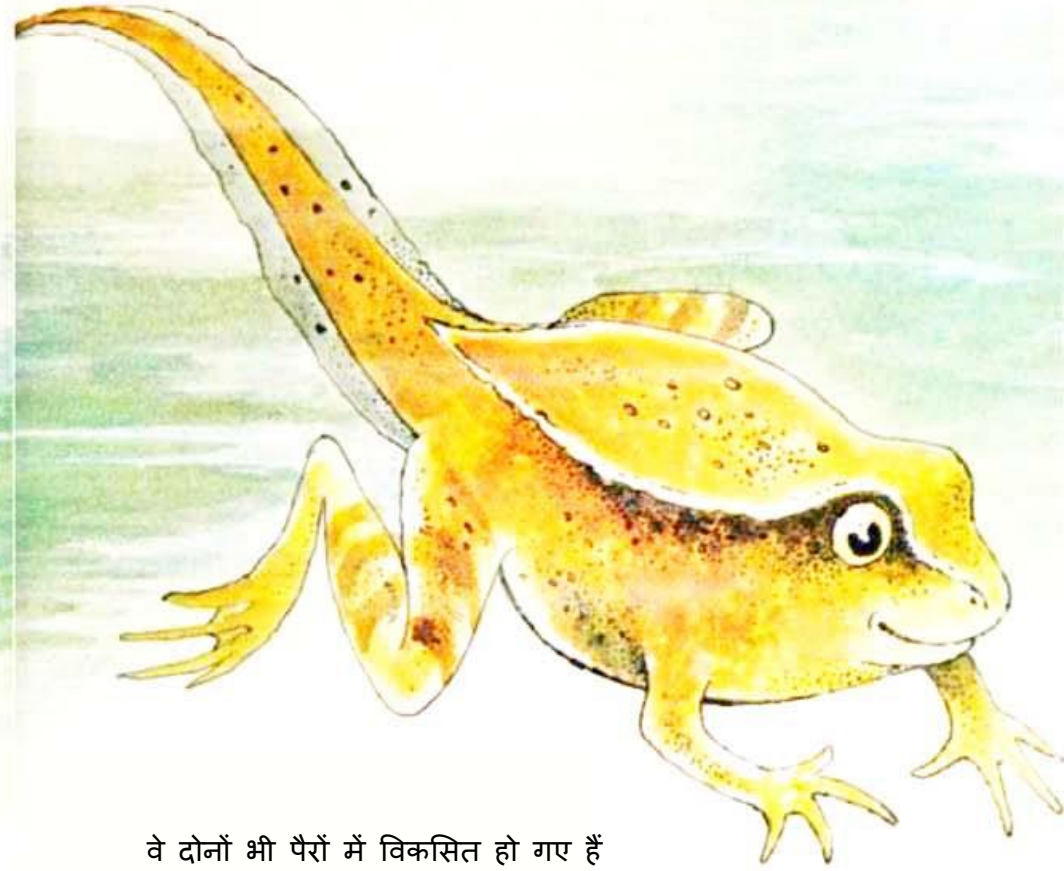
वे दोनों भी पैरों में विकसित हो गए हैं
जिनमें से प्रत्येक में चार चीजें हैं
जो उंगलियों की तरह दिखती हैं.

उसके पैरों की उँगलियाँ बढ़ रही हैं!

प्रकृति कितनी अद्भुत है!

वो अब मछली जैसा नहीं रहा है.

वो अब नन्हें मेंढक जैसा भी नहीं रहा.

चार पैरों के साथ वो बिल्कुल मेंढक जैसा दिखने लगा है. लेकिन वो अभी भी पूरी तरह से मेंढक नहीं बना है.

लेकिन वो एक मेंढक है!

फिर से देखें!
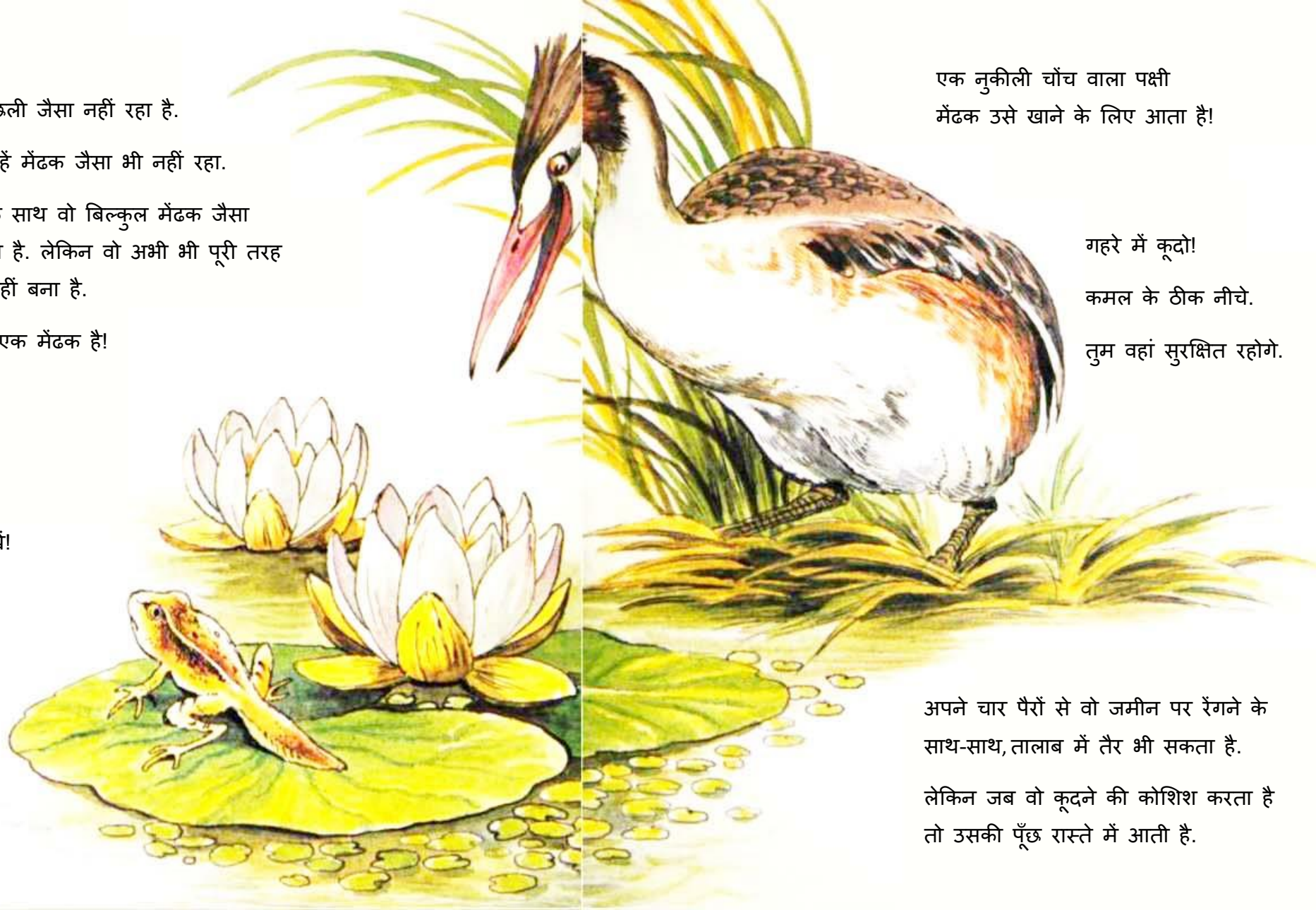
एक नुकीली चोंच वाला पक्षी मेंढक उसे खाने के लिए आता है!

गहरे में कूदो!

कमल के ठीक नीचे.

तुम वहां सुरक्षित रहोगे.

अपने चार पैरों से वो जमीन पर रेंगने के साथ-साथ, तालाब में तैर भी सकता है.

लेकिन जब वो कूदने की कोशिश करता है तो उसकी पूँछ रास्ते में आती है.

गरमी का मौसम

अब आप देख सकते हैं,
उसकी पूँछ छोटी होती जा रही है.

और अब वो पूरी तरह
से गायब हो चुकी है.

अब वो बिल्कुल एक मेंढक है,
जिसका एक सिर, चार पैर और
कोई भी पूंछ नहीं है.
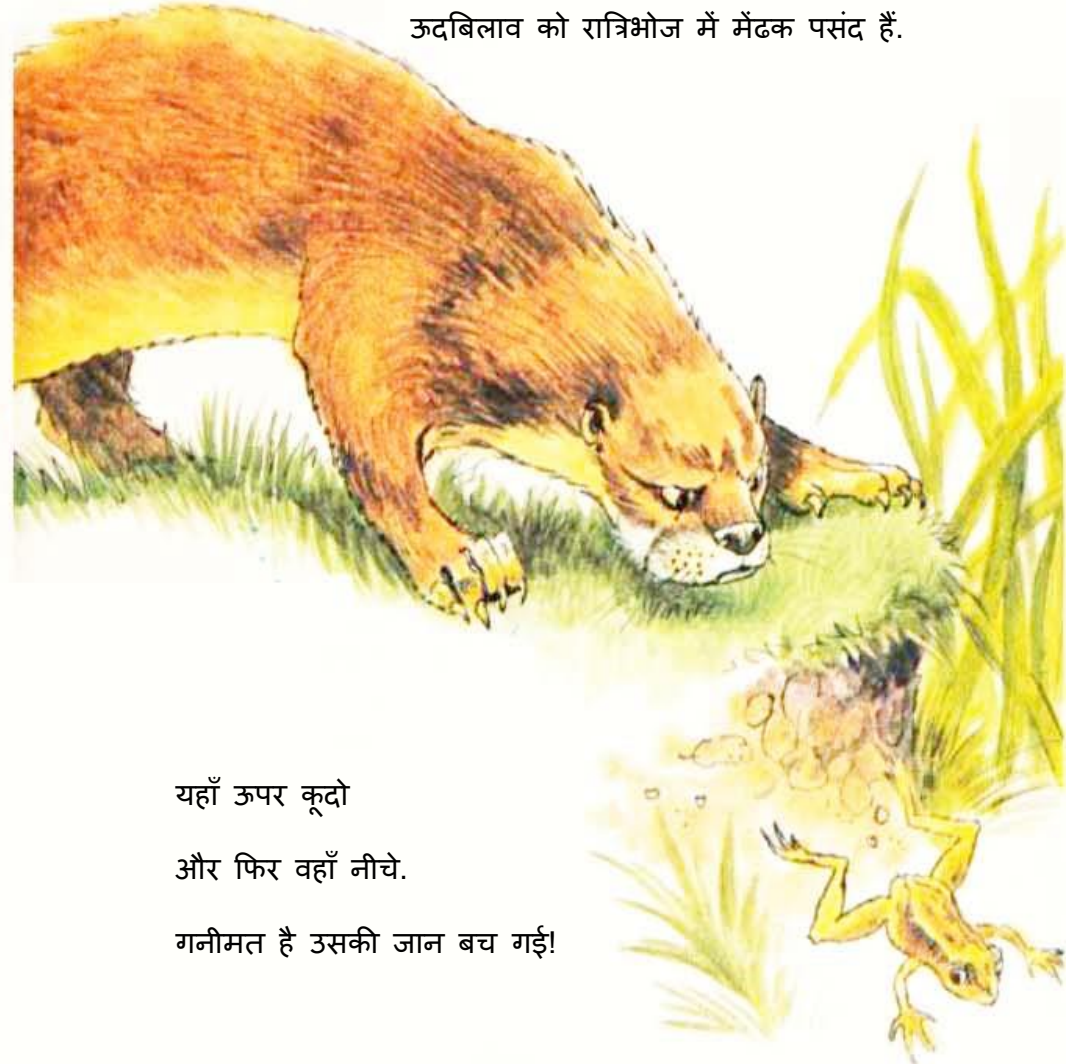
मेंढक को दुश्मनों से अपनी देखभाल करनी होगी.
साँप और बड़े पक्षी खतरनाक होते हैं - और तेज़
भी. फिर एक चिकना ऊदबिलाव आता है.
ऊदबिलाव को रात्रिभोज में मेंढक पसंद हैं.

यहाँ ऊपर कूदो

और फिर वहाँ नीचे.

गनीमत है उसकी जान बच गई!

बड़े मेंढक जलीय पौधे नहीं खाते.

बड़े मेंढकों के शीर्ष दांत और चिपचिपी नोक वाली एक लंबी जीभ होती है जो बिजली की तरह बाहर निकलती है.

जीभ खाने के लिए कीड़े और अन्य चीज़ें पकड़ती है.

जैसे एक मक्खी
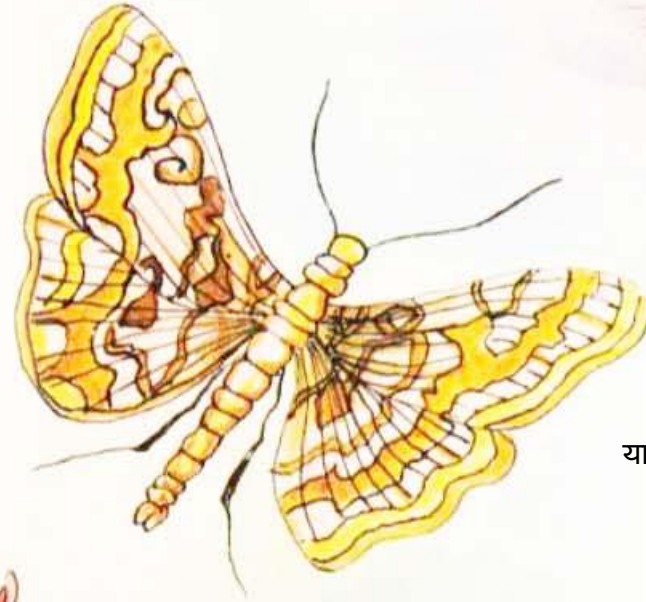
या कोई कीट.

और मकड़ी भी.

वो कितना सुंदर मेंढक है, उसका स्मार्ट धारीदार सिर, सांस लेने के लिए नाक, सुनने के लिए कान और देखने के लिए सिर के किनारों पर बड़ी-बड़ी आंखें हैं.

उसकी आँखों में एक की बजाए दो पलकें होती है.

एक पलक सोते समय बंद हो जाती है. दूसरी पारदर्शी होती है ताकि वो तालाब में उतरते समय उसे बंद कर सके और आंखों में पानी जाए बिना भी देख सके. वो कितनी उपयोगी हैं!
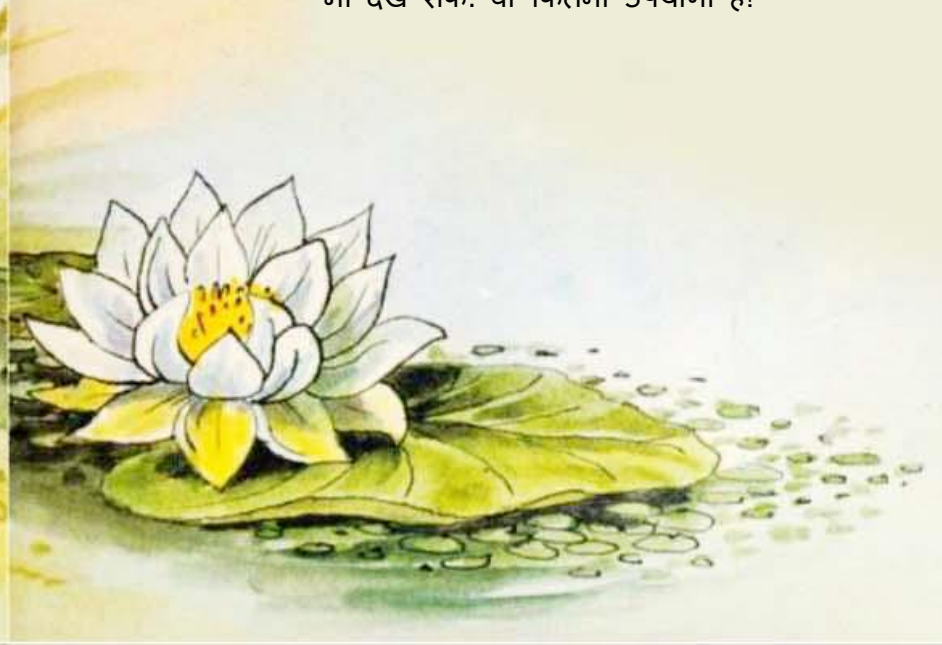
मेंढक बात भी कर सकते हैं.

ठीक है - बात नहीं - लेकिन अपनी ठोड़ी के नीचे
की त्वचा को उड़ाकर वो टर्रा सकते हैं.

ज़रा देखें उनका टर्राना!

जोर से टर्राओ!
फिर और भी
जोर से.

टर्राना!

मेंढक कीचड़ में भी उछल-कूद कर सकते हैं.

ऐसे

और इस तरह

और इस तरह

सावधान रहना और देखो इस
पुस्तक से बाहर मत कूदना!

गर्मी के दिनों में वो खतरे से बचने और ठंडक पाने के लिए तालाब में गोता लगा सकता है.

वो अपने कान और आंखें खुली रखकर धूप में आराम भी कर सकता है.

और वो जी भर कर खा भी सकता है.
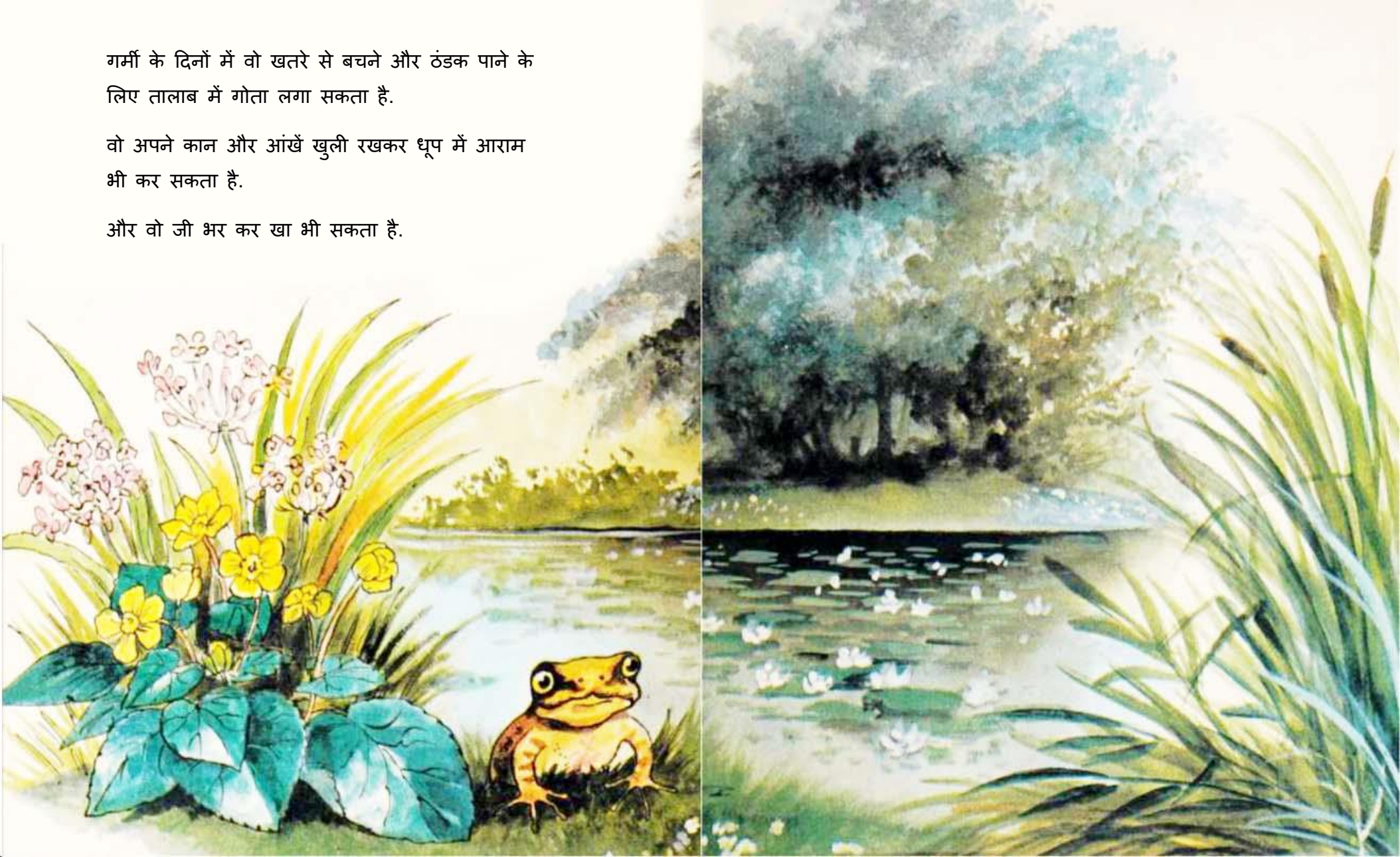
सर्दी

और जब मौसम ठंडा हो जाता है तब भी मेंढक को कोई चिंता नहीं होती. वो खुद को तालाब के तल की कीचड़ में दबा लेता है और लंबे, सर्दियों के महीनों में वहां गर्म रहता है.
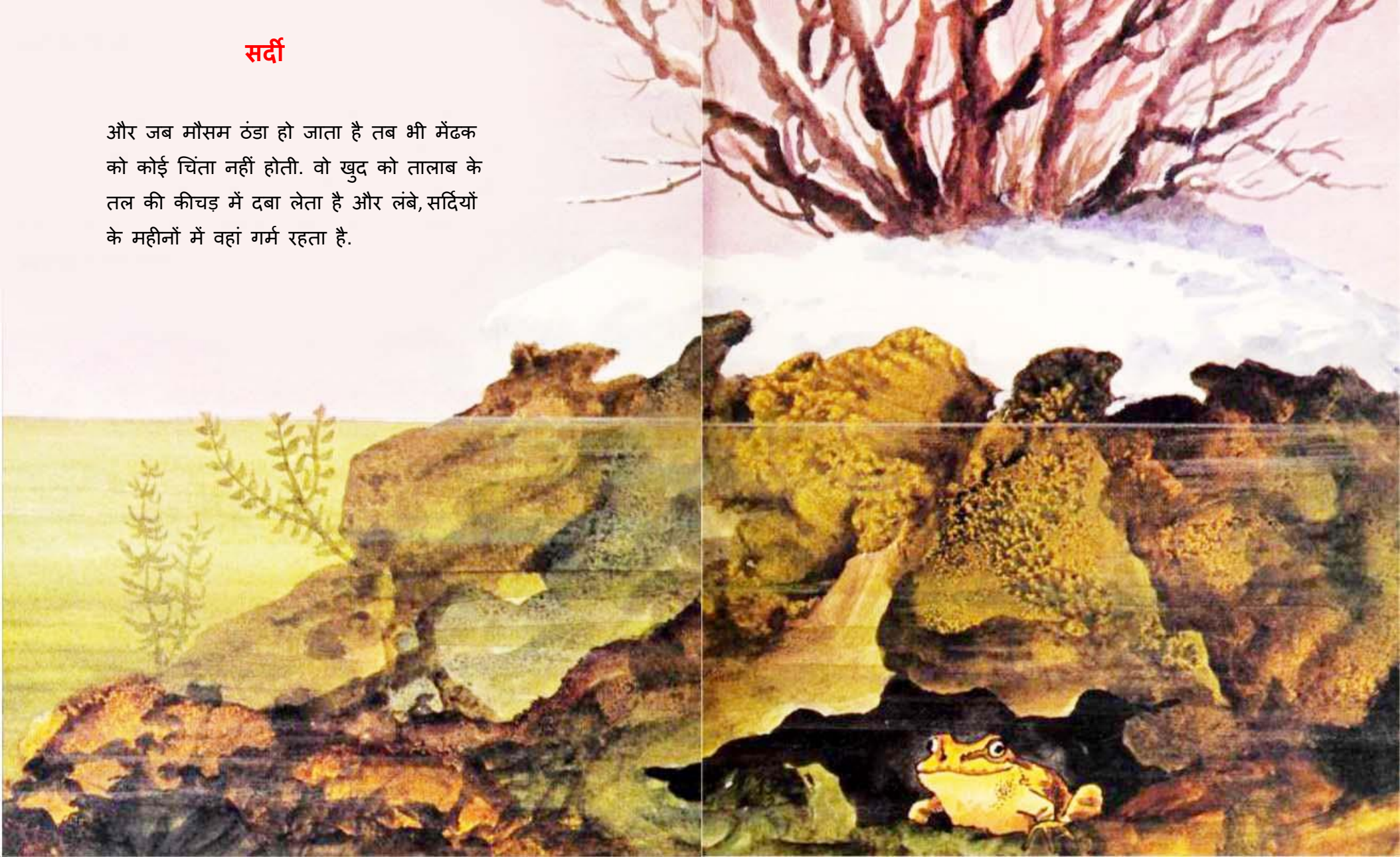
अगली बसंत

जब फिर से गर्म मौसम आता है –
तब मेंढक कीचड़ से बाहर आ जाता है.

छलांग लगाने के लिए.

और रेंगने के लिए.

गोते लगाने

और तैरने के लिए
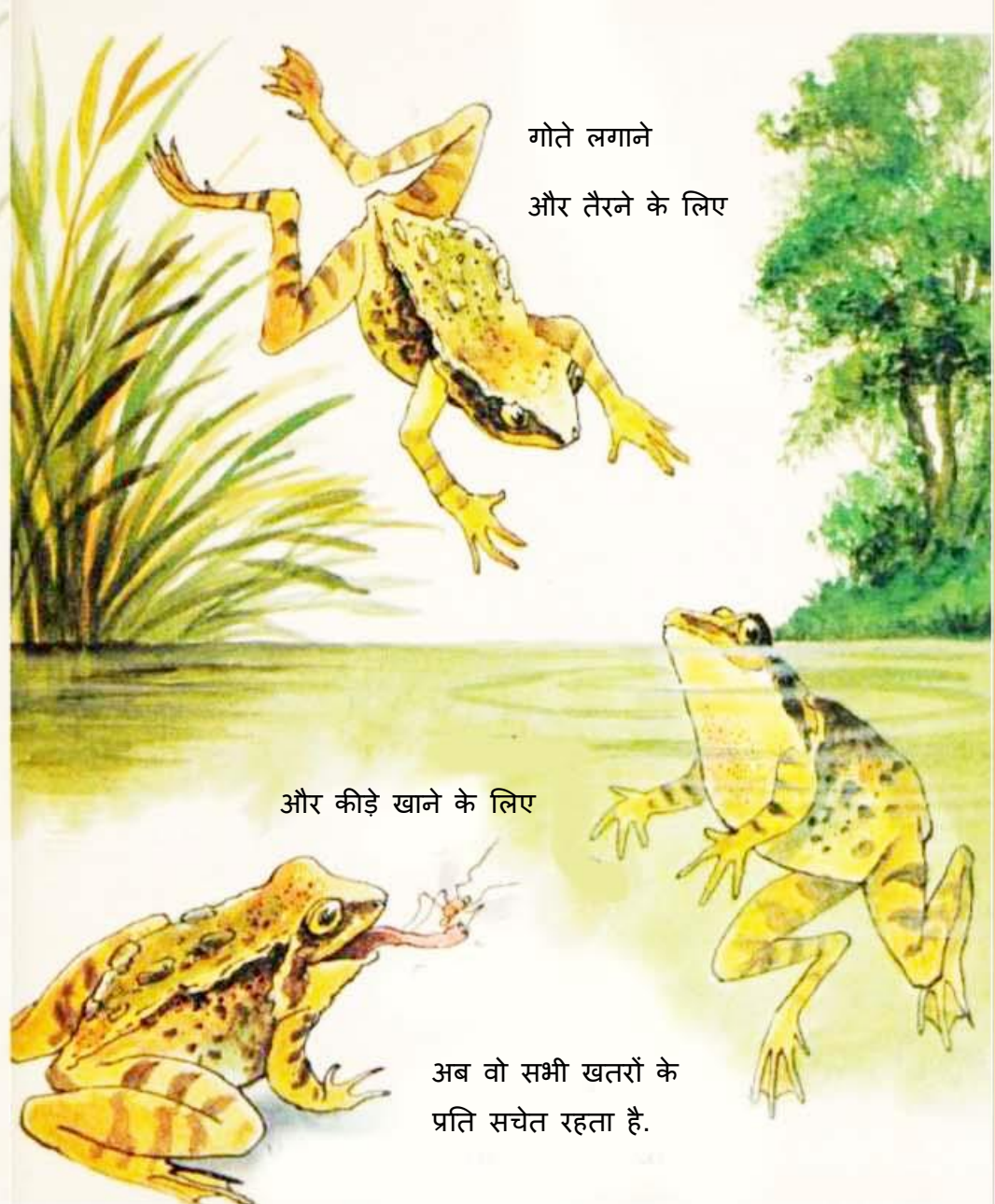
और कीड़े खाने के लिए

अब वो सभी खतरों के
प्रति सचेत रहता है.

एक या दो साल में, वो पूरी तरह से विकसित हो जाएगा, फिर वो एक खूबसूरत मादा मेंढक की तलाश में प्यार से टर्राएगा - और फिर मादा भी टर्र-टर्र करेगी.
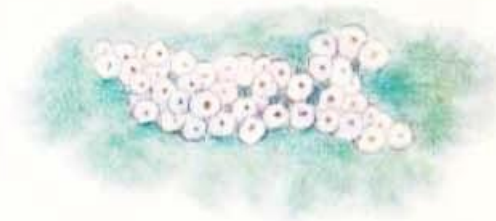
और फिर वे एक-साथ मिलेंगे.
उसके बाद मादा जेली में अंडे देगी.

फि कुछ काले धब्बों की पूँछें बढ़ जाएंगी और वे जेली से बाहर निकल आएंगे.

और जो दुश्मन के खाने से बच जायेंगे, उनके पैर पहले बढ़ेंगे और फिर वे मेंढक में बदल जाएंगे.
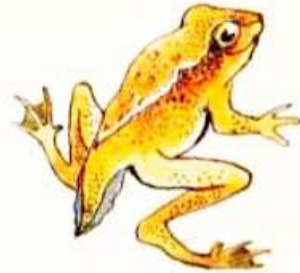
और फिर वे बड़े होकर मजबूत मेंढक बनेंगे.
यही एक मेंढक की जीवन कहानी है!

अंत